सल्तनत कालीन प्रशासन में उल्मावर्ग की स्थिति : एक संक्षिप्त अध्ययन

विजय शंकर यादव

सल्तनत काल में भारतीय मुस्लिम समाज में उल्मा वर्ग की महत्वपूर्ण स्थिति रही है। उनकी यह स्थिति श्रेष्ठ रहने का कारण उनका धर्म सम्बन्धी पर्याप्त ज्ञान था। फलस्वरूप जनमानस उनको सम्मान की दृष्टि से देखता था। प्रशासन पर इनका अधिक प्रभाव था। पूरे सल्तनत काल में उल्मा वर्ग शासको के कृपापात्र बनकर के सहयोग प्रदान करते रहे। उल्मा वर्ग तर्कशास्त्र, इस्लाम तथा अरबी के धार्मिक ग्रन्थों उदाहरणस्वरूप तफसीह, हदीस तथा कलमा के श्रेष्ठ ज्ञाता था। यद्यपि कुरान ग्रन्थ में इनकी विशेषता के सम्बन्ध में अधिक वर्णन नहीं है। तत्पश्चात् इनके कार्यों तथा स्वरूपगत विशेषताओं के कारण यह अवधारणा बन गयी की जैसा पैगम्बर ने कहा कि 'उलेमा का सम्मान करो क्योंकि ये पैगम्बर के उत्तराधिकारी हैं, और जो इनका सम्मान करता है वह पैगम्बर तथा अल्लाह के प्रति सम्मान प्रकट करता है।

उल्मा वर्ग में उलेमा ए–दुनियाँ आते थे। प्रथम वर्ग अर्थात उलमा–ए– अखरत धार्मिक ज्ञान में विश्वास रखते थे तथा सांसारिक एवं राजनीतिक मामलो से स्वयं दूर रहते थे। जबकि उलमा–ए–दुनिया का दृष्टिकोण राजनीतिक तथा भौतिक सुख–सुविधा से परिपूर्ण रहता था वे धन–दौलत तथा सम्मान प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहते थे। सल्तनत काल के प्रारम्भिक वर्षों के दरम्यान प्रशासन में उलेमाओं का आंशिक प्रभाव था। प्रारम्भिक शासक ऐबक ने उलेमा का सम्मान किया परन्तु इस वर्ग द्वारा राजनीति में हस्तक्षेप के विवरण की जानकारी प्राप्त नहीं होती है।